विनोबा कथावली

■ वर्ष : प्रथम ■ अंक : १० ■ मई 2025

एक ज़मीन, पाँच साल और एक सपने की जीत

धानोरे (पुणे): जिला परिषद प्राथमिक शाला धानोरे—जिसे आज लोग तकनीक, गुणवत्ता और नवाचार का आदर्श मानते हैं—1,000 से अधिक विद्यार्थियों के साथ राज्य भर के लिए प्रेरणा का केंद्र बन चुकी है। यहाँ हर साल प्रवेश के लिए अभिभावकों की कतारें लगती हैं।

लेकिन यह सफलता एक लंबा संघर्ष पार कर के आई है। एक समय था जब इस स्कूल की ज़मीन ही उसकी अपनी नहीं थी। जुलाई 2012 में जब प्रधानाध्यापक श्री सत्यवान लोखंडे जी ने कार्यभार संभाला, तब सरकारी योजनाओं के लिए आवश्यक सबसे बुनियादी बात—भूमि का मालिकाना हक़—स्कूल के पास नहीं था।

"हम बच्चों के लिए बहुत कुछ करना चाहते थे," सत्यवान जी बताते हैं, "पर ज़मीन हमारी नहीं थी, तो सरकारी मदद लेना असंभव था। हाथ बंधे हुए थे।"

स्कूल की हालत भी चिंताजनक थी — टीन की छतें जिनसे बरसात में पानी टपकता था, गर्मियों में कक्षाएँ तपती थीं। शौचालय की सुविधाएं नाममात्र थीं और चारों ओर की ज़मीन पर अतिक्रमण हो चुका था। मैदान असमतल था और कई बार वहाँ असामाजिक गतिविधियाँ होती थीं।

इस सबका सीधा असर बच्चों की उपस्थिति और शिक्षकों के मनोबल पर पड़ा।

"कभी-कभी लगता था, क्या वाकई कुछ बदल पाएँगे," एक वरिष्ठ शिक्षक कहते हैं। "पर प्रधान अध्यापक जी की ऊर्जा ने हम सबको जोड़े रखा।"

सत्यवान जी ने एक साथ दो मोर्चों पर काम शुरू

किया — एक ओर 2013 में ज़मीन के हक़ का प्रस्ताव तहसील कार्यालय में दाख़िल किया और दूसरी ओर तुरंत स्कूल की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए निजी स्रोतों की तलाश शुरू की।

"मैंने सोचा, अगर ज़मीन का मामला टलता रहा, तो क्या बच्चों को यूँ ही छोड़ देते?" वे कहते हैं। "हमें तभी काम शुरू करना जरूरी था— चाहे सरकारी निधि आए या न आए।" रोटरी क्लब, पुणे सेंट्रल और अन्य कंपनियों से सीएसआर के माध्यम से कंप्यूटर, ई-लर्निंग किट्स, पंखे, बेंच, स्वच्छ पानी की सुविधाएं मिली। यह बदलाव शिक्षकों के आत्मविश्वास में भी झलकने लगा। "उस समय हमें लगा, अब सिर्फ पढ़ाना नहीं, कुछ बड़ा करना है," वही शिक्षक मुस्कुराते हुए कहते हैं।

इस उत्साह से प्रेरित होकर स्कूल में 'चावडी वाचन' जैसी गतिविधियाँ शुरू हुईं, बच्चों ने स्कॉलरशिप, प्रज्ञाशोध और अन्य शैक्षणिक प्रतियोगिताओं में भाग लेना शुरू किया। स्कूल का नाम क्षेत्र में चमकने लगा।

2018 में पाँच वर्षों की मेहनत रंग लाई — स्कूल की ज़मीन अंततः जिला परिषद के नाम हुई। अब सरकारी निधियों के माध्यम से पक्की इमारत, कंपाउंड वॉल, मैदान समतलीकरण जैसे कार्य संभव हो सके।

आज धानोरे स्कूल न केवल बुनियादी ढांचे में बल्कि तकनीकी उपयोग और छात्रों के आत्मविश्वास के मामले में भी किसी भी निजी स्कूल को टक्कर देता है। यह सफर स्कूल को दो बार पुणे जिला परिषद का 'अध्यक्ष चषक' और राज्य स्तरीय 'मुख्यमंत्री माझी शाळा सुंदर शाळा' पुरस्कार दिला चुका है।

धानोरे की यह यात्रा हमें सिखाती है — जहाँ दूरदृष्टि, संकल्प और समुदाय की एकजुटता हो, वहाँ कोई भी स्कूल एक क्रांति का केंद्र बन सकता है। ■

शिक्षण उत्सव 2

गडचिरोली

पेज 8

किशोरावस्था की दहलीज़ पर कदम रखती बालिकाएँ, जिनके जीवन में पहली बार मासिक धर्म आता है, उन्हें सम्मान से ऋतुमती कहा गया। परंतु अक्सर यह परिवर्तन उनके लिए सुखद नहीं होता। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में...

विनोबा विशेष

पेज 4, 5 6

'बुनियादी पढ़ाई के बिना जिज्ञासा का अंकुर भी नहीं फूटता'

FLN की सार्थकता: सिवनी कलेक्टर सुश्री संस्कृति जैन की 'टीम विनोबा' से बातचीत

जिले के स्कूली शिक्षा व्यवस्था को आप किस रूप में देखती हैं?

यह विषय थोड़ा जटिल है। एक ओर सरकारी स्कूलों की प्रतिस्पर्धा निजी स्कूलों से है जिसकी वजह से नामांकन की संख्या लगातार उतार-चढ़ाव में रहती है। दूसरी ओर FLN के आंकड़े फिलहाल उतने उत्साहजनक नहीं हैं। अगर बच्चा पढ़ ही नहीं पा रहा तो उसकी सीखने की इच्छा भी पनप नहीं सकती। ऐसे बच्चे जिन्हें पढ़ाई के बुनियादी स्तंभ ही स्पष्ट नहीं होते, मिडिल स्कूल और फिर हाई स्कूल पहुंचते हैं, तब जटिल विषयों को समझ पाना उनके लिए कठिन हो जाता है।

हमारे पास इसका एक बहुत ही प्रभावी इलाज है – वो है हमारे प्रशिक्षित शिक्षक। कई शिक्षक बहुत मेहनत और निष्ठा से काम कर रहे हैं। अगर वे बच्चों को इतना आत्मविश्वास दे सकें कि वे किसी भी सामग्री को पढ़कर समझ सकते हैं, तो आज की दुनिया में उनके लिए ज्ञान के असंख्य स्रोत हैं। वे खुद खोज कर सीख लेंगे।

FLN को लेकर प्रशासनिक या प्रणालीगत अड़चनें क्या हैं?

हमें अपने शिक्षकों को यह समझाना होगा कि परंपरागत तरीके से विषय को रटाने के बजाय बच्चों को पढ़ने और समझने की सीख देना जरूरी है। अभी भी परीक्षा पास करवा देना ही अभिभावकों का लक्ष्य रहता है। लेकिन असल शिक्षा वह है कि जब बच्चा बाज़ार में जाए तो वह साइनबोर्ड पढ़ सके, मील के पत्थर पर लिखे नंबर समझ सके, दिन-प्रतिदिन के जीवन में बड़ी-छोटी संख्याओं का अंतर पहचान सके, जोड़-घटाव कर सके – तभी तो हम कह सकते हैं कि FLN के मापदंड पूरे हो रहे हैं। ज़रूरी है कि एक निश्चित आयु तक बच्चे इन बुनियादी क्षमताओं को हासिल कर लें। हमारे शिक्षक चाहें तो इसे संभव बना सकते हैं।

आगे की दिशा

फिलहाल, मेरा लक्ष्य है कि गर्मी की छुट्टियाँ खत्म होने से पहले हम हर प्राथमिक स्कूल में बेसिक इन्फ्रास्ट्रक्चर ठीक करा दें। दूसरा बड़ा फोकस है FLN ट्रैकिंग – यानी शिक्षक इस आदत में आएँ कि वे अपने छात्रों के FLN परिणामों को नियमित रूप से दर्ज करें, उन पर काम करें और उसमें सुधार करें। मेरा मानना है कि, अगर यह आदत बन गई, तो भले ही मैं इस पद पर न रहूं, ये प्रयास चलते रहेंगे और शिक्षा की बुनियाद मज़बूत होती रहेगी।

शिक्षा प्रणाली को लेकर क्या बड़ी चुनौतियाँ हैं?

शिक्षा का क्षेत्र हमेशा से जटिल रहा है क्योंकि इसमें बहुत बड़ी संख्या में लोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े होते हैं। ये सभी लोग अपनी-अपनी परिस्थितियों से जूझ रहे होते हैं – ऐसे में उन्हें लगातार प्रेरित रखना एक बड़ी जिम्मेदारी है। सिवनी जिले में इस समय लगभग 2,200 प्राथमिक स्कूल हैं। इनमें से कई स्कूलों में इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमी है – जैसे पर्याप्त डेस्क-बेंच न होना, कमरे टूटे-फूटे होना या शौचालयों की स्थिति खराब होना। इन कारणों से माता-पिता निजी स्कूलों की ओर रुख कर लेते हैं, चाहे वह खर्च कितना भी हो। वे चाहते हैं कि उनके बच्चे एक अच्छी सुविधा वाली स्कूल में पढ़ें।

इसी को ध्यान में रखते हुए हमने हाल ही में 'गिफ्ट ए डेस्क' पहल शुरू की है। इसके तहत कोई भी व्यक्ति, संस्था या समूह किसी भी प्राथमिक स्कूल में डेस्क दान कर सकता है। इससे स्कूलों की ज़रूरत भी पूरी होगी और समाज की भागीदारी भी बढ़ेगी।

विनोबा की क्या भूमिका रही है? और कोई सुझाव देना चाहेंगी?

विनोबा हमारे लिए एक बड़ा संबल रहा है। जिले में कई शिक्षक हैं जो ईमानदारी और लगन से बच्चों को पढ़ा रहे हैं। विनोबा ने उनकी कोशिशों को एक मंच दिया है, जहाँ वे एक-दूसरे का काम देख सकते हैं, सीख सकते हैं और प्रेरणा ले सकते हैं।

पिछले शैक्षणिक सत्र में हमने दो बार बुनियादी आकलन (बेसलाइन टेस्ट) कराए, जिसमें विनोबा ऐप द्वारा OMR शीट्स का प्रयोग किया गया। इसका सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि हमें हर बच्चे के स्तर की जानकारी मिल सकी। यहाँ के शिक्षक अभी आँकड़ों से उतने सहज नहीं हैं। उन्हें सरल भाषा में, सीधे सुझावों के साथ यह बताया जाना चाहिए कि किस बच्चे को किन-किन बातों में मदद की ज़रूरत है। इसके लिए हमने शिक्षकों को सही जानकारी देने के लिए प्रोत्साहित करना शुरू किया है; एक ऐसी प्रणाली भी विकसित की है जिससे इन जानकारियों की शुद्धता को जांचा जा सके। ■

जशपुर, 17 मार्च: जिले में आयोजित एक कार्यक्रम में, कलेक्टर श्री रोहित व्यास के हाथों 10 शिक्षकों को 'पोस्ट ऑफ द मंथ' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जशपुर, 27 मार्च: DMC नरेंद्र कुमार सिन्हा के हाथों 'बोलेगा बचपन' के लिए 7 शिक्षकों और 1 सीएसी का सम्मान हुआ; 4 को लाइब्रेरी बैग प्रदान किए गए।

धाराशिव, 19 मार्च: धाराशिव ZP CEO श्री मैनाक घोष ने यहां आयोजित एक जिलास्तरीय कार्यक्रम में 6 शिक्षकों को 'POM' और 6 स्कूलों को छात्रवृत्ति परीक्षाओं के लिए सम्मानित किया।

चंद्रपुर, 25 मार्च: DyEO विशाल देशमुख ने 3 केंद्र प्रमुखों को, 10 शिक्षकों को 'POM', 'महावाचन', 'सोशल अवेयरनेस' के लिए और 6 स्कूलों को छात्रवृत्ति के लिए सम्मानित किया।

पुणे, 21 अप्रैल: DIET प्रिन्सिपल नामदेव शेंदकर और अन्य अधिकारियों द्वारा 2 शिक्षिकाओं को लैपटॉप भेंट किए गये; साथ ही OLF के 267 TAG समन्वयकों को सम्मानित किया गया।

बस्तर, 17-23 अप्रैल: शासन के दिशा निर्देश में संचालित विभिन्न कार्यक्रमों में शैक्षिक गुणवत्ता और शिक्षकों के अभिप्रेरणा हेतु, विनोबा कार्यक्रम के अंतर्गत, शिक्षकों का उन्मुखीकरण कार्य संपन्न किया गया।

गडचिरोली, 27 मार्च: ZP CEO सुहास गाडे और अन्य अधिकारियों ने 12 शिक्षकों को 'POM', 'मॉर्निंग असेंबली', 'महावाचन' के लिए; 3 स्कूलों को छात्रवृत्ति के लिए और 3 केंद्र प्रमुखों को सम्मानित किया।

जांजगीर-चांपा, 28 मार्च: कुल 17 शिक्षकों को 'POM' और 'बोलेगा बचपन' गतिविधि के लिए डीएमसी राजकुमार तिवारी, एपीसी प्रदीप मिश्रा के हाथों सम्मानित किया गया।

पिंक क्लब - कुरदा की शिक्षिकाओं का अनूठा प्रयास

कुरदा (जांजगीर-चांपा): जब वर्ष 2008 में अंजना सिंह परिहार जी शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कुरदा में शिक्षिका के रूप में आईं, तो उन्होंने छात्राओं की उपस्थिति में एक अजीब सा पैटर्न देखा। कक्षा 9 से 12 तक की कई छात्राएँ अचानक अनुपस्थित रहने लगी थीं या दोपहर के बाद स्कूल छोड़ देती थीं। आश्चर्य की बात यह थी कि ये छात्राएँ अन्यथा पढ़ाई में अच्छी, अनुशासित और समय की पाबंद थीं।

अंजना जी बताती हैं, "मैंने गौर किया कि यह समस्या किसी एक दिन की नहीं थी। फिर हम शिक्षिकाओं ने छात्राओं से बात की और कुछ मामलों में उनके घर भी गए। तब हमें असली कारण पता चला। ये लड़कियाँ उस उम्र में थीं जब वे मासिक धर्म के दौर से गुजर रही थीं, लेकिन इसके बारे में सही जानकारी की कमी और पर्याप्त सुविधाओं के अभाव में वे इन्फेक्शन या दर्द जैसी परेशानियों का सामना कर रही थीं। शर्म और झिझक के कारण वे किसी को कुछ बता भी नहीं पाती थीं। कई बार तीन-चार दिनों तक स्कूल से गायब रहती थीं, जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही थी।"

इस समस्या के समाधान के लिए शिक्षिकाओं ने आपस में चर्चा की और यह तय किया कि यदि लड़कियों को सही जानकारी और आवश्यक संसाधन मिलें, तो उनकी उपस्थिति और आत्मविश्वास दोनों में सुधार हो सकता है। इसी सोच के साथ शिक्षिकाओं ने 'पिंक क्लब' की शुरुआत की।

यह क्लब पूरी तरह उनके व्यक्तिगत प्रयासों पर आधारित है। अपने-अपने वेतन से राशि इकट्ठा कर वे छात्राओं को निःशुल्क सेनेटरी पैड उपलब्ध कराती हैं। साथ ही छात्राओं के लिए विशेष परामर्श सत्र भी आयोजित किए जाते हैं ताकि वे मासिक धर्म से जुड़ी भ्रांतियाँ दूर कर सकें और स्वास्थ्य के प्रति सजग बन सकें।

जिन छात्राओं की उपस्थिति अत्यधिक कम होती है, उनके घर जाकर शिक्षिकाएँ माता-पिता से बात करती हैं और उन्हें इस विषय पर संवेदनशीलता से जागरूक करने का प्रयास करती हैं।

उनका यह भी प्रयास रहता है कि मासिक धर्म के दौरान छात्राओं को कोई असुविधा न हो और स्कूल का वातावरण यथासंभव स्वच्छ बना रहे। उदाहरण के लिए, स्कूल पुराना है और शौचालयों की स्थिति संतोषजनक नहीं है, इसलिए शिक्षिकाएँ स्वयं ही फिनाइल, हैंडवॉश और अन्य साफ-सफाई की सामग्री खरीदती हैं ताकि छात्राओं को असुविधा न हो।

इस पहल में नियमित रूप से योगदान देनेवाली शिक्षिकाएँ हैं – श्रीमती अंजना सिंह परिहार, श्रीमती शांति थवाइत, श्रीमती रेखा साहू, श्रीमती रजिया अंजुम शेख, श्रीमती भावना मशीह, श्रीमती अपर्णा त्रिपाठी, श्रीमती वर्षा सिंह थवाइत, श्रीमती ज्योति सराफ और श्रीमती नीलम राठौर। ये सभी बारी-बारी से छात्राओं के लिए सेनेटरी पैड और अन्य आवश्यक सामग्री खरीदती हैं।

अंजना जी कहती हैं, "हम बच्चियों के लिए काम करते रहेंगे और स्कूल की स्थिति सुधारने का प्रयास जारी रखेंगे। स्कूल कि यह हालत इसलिए है क्योंकि दशकों तक शिक्षा को वह गंभीरता नहीं मिली है जो मिलनी चाहिए थी। यह ज़रूरी है कि हम इस जागरूकता की मशाल को बुझने न दें। क्योंकि शिक्षा ही वह शक्ति है जो हालात को सचमुच बदल सकती है।" ■

ऋतुमती

समझ से संवरता एक बदलाव

कुनघाड़ा रै (गढ़चिरोली): ऋतुमती। किशोरावस्था की दहलीज़ पर कदम रखती बालिकाएँ, जिनके जीवन में पहली बार मासिक धर्म आता है, उन्हें सम्मान से ऋतुमती कहा गया। परंतु दुर्भाग्य से अक्सर यह परिवर्तन उनके लिए सुखद नहीं होता। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां इस विषय पर चुप्पी और संकोच की दीवारें अब भी बुलंद हैं।

माहवारी से जुड़ी सामान्य बातों को भी घरों में न बताया जाता है, न समझाया जाता है। मां-बेटी के बीच भी इस विषय पर संवाद नहीं होता। लड़कियाँ चुपचाप डर, शर्म और असहजता के साथ यह बदलाव सहती रहती हैं। इसी चुप्पी को तोड़ने के लिए कुनघाड़ा रै के जिला परिषद स्कूल में 'ऋतुमती' नामक एक अनोखी पहल की गई।

शिक्षिका प्रीति नवघडे, जिनके नेतृत्व में यह पहल शुरू हुई, बताती हैं, "हमने महसूस किया कि यदि इन बेटियों को सहज भाषा में सही जानकारी दी जाए, तो वे न केवल खुद को संभाल सकती हैं, बल्कि अपने जैसी अन्य लड़कियों की भी मदद कर सकती हैं।" इस पहल में उनकी सह शिक्षिकाएं — कुमारी रेखा हटनागर व दीपाली बोदलकर — भी पूरी लगन और संवेदनशीलता के साथ काम करती हैं। इन शिक्षिकाओं की तड़प और निष्ठा का ही परिणाम रहा कि आज उनके स्कूल की छात्राओं को इस अड़चन से राहत मिली है। इस नवाचार को राज्यस्तरीय नवोपक्रम स्पर्धा में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। प्रीति जी की लिखी पुस्तक 'ऋतुमती' को SCERT के प्रतिष्ठित 'राज्यस्तरीय ग्रंथ पुस्तक निर्मिती स्पर्धा' में भी चयनित किया गया।

प्रीति जी ने शुरुवात में छठी और सातवीं कक्षा की छात्राओं के लिए विशेष सत्र आयोजित किए। उन्हें सरल ढंग से यह समझाया कि मासिक धर्म कोई बीमारी नहीं, बल्कि शरीर की एक सामान्य प्रक्रिया है। स्वच्छता कैसे रखनी है, संक्रमण से कैसे बचना है, उपयोग किए गए पैड का निस्तारण किस तरह करना है, इन सब बातों पर उन्होंने छात्राओं के साथ विस्तार से चर्चा की।

इस कार्य में योगदान के रूप में ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) और गडचिरोली जिला केमिस्ट ऐंड ड्रगिस्ट एसोसिएशन की ओर से छात्राओं को मुफ्त सैनिटरी पैड वितरित किए गए। साथ ही, स्मार्ट टीवी पर शैक्षणिक वीडियो, विशेषज्ञों के मार्गदर्शन और नियमित संवाद सत्रों से बालिकाओं को आत्मीयता के साथ विषय समझाया गया। पैड वेंडिंग मशीन की जानकारी से लेकर, "पीरियड पाउच" का प्रयोग और भावनात्मक बदलावों को संभालना — इन सभी बातों को समझाया गया।

पुस्तक 'ऋतुमती' पढ़कर, जो एक डॉक्टर माँ और उसकी बेटी के संवाद पर आधारित है, बच्चियाँ न सिर्फ जानकारी लेती हैं, बल्कि सत्रों में अपने विचार भी साझा करतीं हैं। प्रधानाध्यापिका वर्षा गौरकर कहती हैं, "हमने कोशिश की कि मासिक धर्म पर बात करना लड़कियों के लिए उतना ही सहज हो जाए जितना स्कूल में अन्य विषयों पर चर्चा करना।"

आज स्थिति यह है कि स्कूल की ये बालिकाएँ अब इस बदलाव को घबराहट या शर्म से नहीं, समझ और आत्मविश्वास से स्वीकार कर रही हैं। वे एक-दूसरे की सहायता करती हैं और छोटी बहनों का मार्गदर्शन भी। यह पहल साबित करती है कि सही मार्गदर्शन और संवेदनशील प्रयासों से बदलाव की शुरुआत कहीं से भी हो सकती है — चाहे वह गडचिरोली का एक दूरस्थ गांव ही क्यों न हो।

टीम विनोबा को गर्व है कि उनके साथ ऐसे शिक्षक हैं, जो सिर्फ पाठ्यक्रम ही नहीं, जीवन के जरूरी पाठ भी बच्चों को सिखा रहे हैं। ■

‘मासिक धर्म - कमजोरी नहीं, ताकत है स्त्री की’

शिक्षिका मनीषा अवस्थी कहती हैं: इस विषय पर चर्चा का अभाव कितनी ही लड़कियों को प्रभावित कर रहा है।

दीपकनगर (दुर्ग): “सभी लड़कियाँ ध्यान से सुनें। मासिक धर्म कोई गंदगी नहीं, बल्कि यह एक जैविक प्रक्रिया है, जो हर स्त्री के शरीर को मातृत्व के लिए तैयार करती है। यह हमें कमज़ोर नहीं, बल्कि सशक्त बनाती है।” यह शब्द हैं SAGES दीपकनगर की मिडल विंग की प्रधानाध्यापिका मनीषा अवस्थी के, जो एक विशेष कार्यशाला में छात्राओं को संबोधित कर रही थीं।

कार्यशाला के दो ही दिन पहले स्कूल की सफाई कर्मचारी ने मनीषा जी से कहा कि लड़कियों के शौचालय और कूड़ेदान की सफाई करना बेहद कठिन होता जा रहा है। कई बार सैनिटरी पैड्स को शौचालय में फ्लश कर दिया जाता था या डस्टबिन में यूँ ही फेंक दिया जाता था।

मनीषा जी समझ गई कि यह सिर्फ एक व्यवहारिक समस्या नहीं है, बल्कि जानकारी और संवेदनशीलता की कमी का नतीजा है और इस विषय पर खुलकर बात करना उन्हें ज़रूरी लगा।

उन्होंने कक्षा 6 से 8 तक की सभी लड़कियों के लिए एक कार्यशाला आयोजित की। लेकिन, पहले उन्होंने लड़कियों की झिझक कम करने के लिए उन्हें "पैडमैन" फिल्म के कुछ महत्वपूर्ण दृश्य

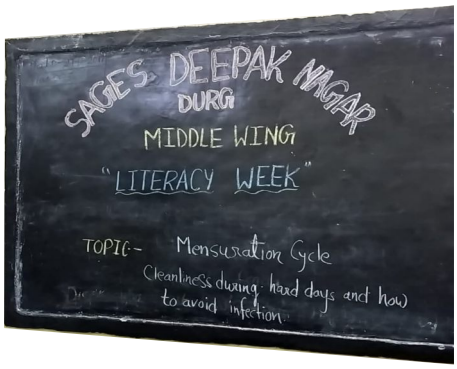

दिखाए। वे कहती हैं, “इस फिल्म के कुछ हिस्से मासिक धर्म को समझाने में बेहद मददगार हैं – खासकर उस संघर्ष को जो कई लड़कियाँ चुपचाप झेलती हैं।”

इसके बाद उन्होंने कार्यशाला में छात्राओं से बातचीत शुरू की। उन्होंने पूछा कि शरीर में क्या-क्या बदलाव होते हैं, कैसा महसूस होता है और वे इन स्थितियों से कैसे निपटती हैं। शुरुआत में लड़कियाँ चुप थीं, लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने बोलना शुरू किया।

तब मनीषा जी को एक और बात समझ में आई – लड़कियाँ विज्ञान की कक्षा में जैविक बदलावों के बारे में पढ़ तो रही थीं लेकिन वे इन जानकारियों को अपने जीवन की वास्तविक चुनौतियों से जोड़ नहीं पा रही थीं। यही वजह थी कि वे मासिक धर्म से जुड़ी समस्याओं का सामना करते समय असहाय थीं।

उन्होंने यह भी जाना कि अधिकांश छात्राएँ सैनिटरी पैड्स के उचित निपटान के तरीकों से अनजान थीं। उन्हें नहीं पता था कि पैड गलत तरीके से फेंकना संक्रमण फैला सकता है।

फिर मनीषा जी ने लड़कियों से संवाद जारी रखा। उन्होंने खुद अपने किशोरावस्था के अनुभव साझा किए ताकि लड़कियाँ उनसे जुड़ सकें और खुलकर बात कर सकें। इसके बाद आने वाले हफ्तों में मनीषा जी ने इस विषय पर कई नियमित कार्यशालाएँ आयोजित कीं। छात्राओं को स्वच्छता के नियम बताए गए, सैनिटरी पैड्स के इस्तेमाल और निपटान के सही तरीके समझाए। जरूरतमंद लड़कियों के लिए स्कूल में ही पैड्स की व्यवस्था की।

इन सत्रों का प्रभाव जल्द ही नज़र आने लगा। लड़कियाँ मासिक धर्म के समय भी स्कूल में सहज रहने लगी।

मनीषा जी बताती हैं कि अब सफाई कर्मचारी की शिकायतें आना बंद हो गई हैं। छात्राएँ अब इस विषय को लेकर ज़्यादा संवेदनशील और जिम्मेदार हो चुकी हैं।

मनीषा जी ने अगली कुछ कार्यशालाओं में लड़कों को भी शामिल किया, उन्हें मासिक धर्म से जुड़ी भ्रांतियों और सामाजिक दृष्टिकोण के बारे में जागरूक किया। चूंकि छात्र पहले से ही विज्ञान की कक्षा में प्रजनन प्रणाली के बारे में पढ़ चुके थे, वे भी इस चर्चा को समझ सके, उसे गंभीरता से सके।

मनीषा जी मुस्कुराते हुए कहती हैं, “अब बायोलॉजी की क्लास में बच्चे खुलकर सवाल पूछते हैं। पहले शर्माते थे, अब खुलकर जिज्ञासा करते हैं। क्या यही असली बदलाव नहीं है?” ■

'अब मेरा काम पूरे देश तक पहुँचेगा'

पांडुका (गरियाबंद): "पहले मेरे काम को बस मेरी कुछ सहकर्मी ही देख पाते थे। किसी को नहीं पता था कि हम शिक्षक स्कूली शिक्षा में कितना कुछ रचनात्मक कर रहे हैं। लेकिन विनोबा ऐप ने मुझे वो मंच दिया, जहाँ अब न सिर्फ देशभर के शिक्षक अब मेरे कार्य को देख पाएंगे, बल्कि मेरे संघर्षों को समझ भी पाएंगे।" यह कहते हुए शिक्षिका श्रीमती कबिता आचार्जी के चेहरे पर गर्व और संतोष की मुस्कान दिखाई देती है।

गरियाबंद जिले के पांडुका में स्थित शासकीय पूर्व माध्यमिक कन्या शाला मिडिल पांडुका में वर्ष 2018 से कार्यरत कबिता जी अंग्रेजी की शिक्षिका हैं। वे न केवल एक समर्पित शिक्षिका हैं, बल्कि बच्चों के भविष्य को संवारने वाली एक रचनात्मक मार्गदर्शक भी हैं। पिछले दो वर्षों से वे विनोबा ऐप से जुड़ी हैं और उसका भरपूर उपयोग कर रही हैं। उनका मानना है कि यह ऐप शिक्षक जीवन का एक शक्तिशाली साधन है — जहां जी.आर. और फॉर्म्स से लेकर मासिक मूल्यांकन तक सब कुछ एक क्लिक पर है। सबसे बड़ी बात, अब उनका काम सिर्फ उनके विद्यालय तक नहीं, बल्कि पूरे देश तक पहुँच सकता है।

कबिता जी की विशेषता रही है रोल प्ले के माध्यम से पढ़ाना। वे बताती हैं, "मैं पिछले दस वर्षों से पाठों को संवादों में ढालकर बच्चों से अभिनय करवा रही हूं। इससे वे न सिर्फ पाठ याद रखते हैं, बल्कि आत्मविश्वास भी पाते हैं।" वह कहती हैं कि इस पद्धति की खास बात यह है कि बच्चे स्टोरी या वार्तालाप से संबंधित चरित्रों का अभिनय करते हैं और पाठ आधारित विषय-वस्तु को आत्मसात करते हैं। यही नहीं, इन चरित्रों की अमिट छाप बच्चों के मन में रह जाती है। "रोल प्ले एक सुंदर कला भी है, जिससे बच्चों में अंतर्निहित कलात्मक प्रतिभा का विकास होता है।"

कोरोना के दौरान उन्होंने इस पद्धति को एक कदम आगे बढ़ाया। उन्होंने बच्चों के लिए संवादों को छत्तीसगढ़ी संदर्भ में सरल बनाया, उन्हें याद कराया, रिहर्सल कराई और फिर कैमरे पर उनकी प्रस्तुति रिकॉर्ड की। "कैमरे का असर यह हुआ कि बच्चे अब और भी गंभीरता से तैयारी करते हैं। और यह देखकर मन खुश हो जाता है। इस प्रक्रिया में वे न केवल मज़े से पढ़ाई करते हैं, बल्कि अगली भूमिका के लिए भी उत्साह से प्रतीक्षा करते हैं।" उनके इन प्रयासों से न केवल भाषा या इतिहास के विषय पक्के हुए बल्कि बच्चों की अभिव्यक्ति क्षमता, रचनात्मकता और आत्मविश्वास तीनों को मज़बूती मिली।

महामारी के समय जब शिक्षा लगभग ठहर गई थी, तब कबिता जी ने "पढ़ई तुहर द्वार", "मोहल्ला क्लास" और ब्रिज कोर्स जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखा। उनके इन प्रयासों को जिला शिक्षा विभाग ने सराहा और उन्हें उत्कृष्ट कार्य शिक्षक सम्मान प्रदान किया।

आज वे विनोबा ऐप के "बोलेगा बचपन" अभियान का सक्रिय हिस्सा हैं और मानती हैं कि शिक्षा केवल ज्ञान नहीं, बल्कि बच्चों की सोच, भावना और कल्पना को संवारने का माध्यम है। कबिता आचार्जी की कहानी इस बात का प्रमाण है कि जब एक शिक्षक सृजनात्मकता और समर्पण से कार्य करता है, तो वह न केवल कक्षा बदलता है — बल्कि भविष्य गढ़ता है।

कविता

शिक्षा को तेरी पहचान लिखूं

शिक्षा को तेरी पहचान लिखूं
तू उड़ सके वो आसामान लिखूं।
जो सपने देखे तूने, उन
सपनों का जहान लिखूं।
सीखने की कोई उम्र न हो
हर उम्र तेरे नाम लिखूं।
न हो मजबूरियां किसी की
न शिक्षा से कोई वंचित हो
बाधा बने जो मुश्किलें
हर मुश्किल का जवाब लिखूं।
शिक्षा को तेरी पहचान लिखूं।।
पंखों में जब हो न भरोसा
तू उड़ सके वह हौसला लिखूं।
शिक्षा को तेरी पहचान लिखूं।
तेरे चेहरे पर मुस्कान लिखूं
तुझसे अपनी पहचान (शिक्षक) लिखूं।
कलम से इतिहास ही रच दूँ
एक दिन वो कमाल लिखूं।
शिक्षा को तेरी पहचान लिखूं।
शिक्षा को तेरी पहचान लिखूं।

सुश्री आरती सोनवानी
सहायक शिक्षक (विज्ञान)
गरियाबंद

कूट प्रश्न 10 का उत्तर

COLD - CORD - WORD - WORM - WARM

गडचिरोली में सजी प्रेरित शिक्षकों की अनोखी पाठशाला

गडचिरोली: "शिक्षक ही बदलाव के वाहक हैं और उनके हाथों में ही भविष्य की दिशा है।" — यह प्रेरणादायक बात जिला कलेक्टर अविश्यान्त पांडा ने 'शिक्षण उत्सव 2025' के दौरान कही। उन्होंने कहा कि शिक्षा को सरल, आनंददायक और बच्चों की ज़रूरतों के अनुकूल बनाने की जिम्मेदारी शिक्षकों की है और ऐसे आयोजन उन्हें नई ऊर्जा और दिशा प्रदान करते हैं।

यह उत्सव जिला परिषद गडचिरोली, मास्टेक फाउंडेशन और ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) के सहयोग से आयोजित किया गया। इसमें गडचिरोली, नागपुर, भंडारा और चंद्रपूर जिलों के 100 से ज़्यादा शिक्षक, प्रधानाध्यापक और अधिकारी शामिल हुए।

शिक्षण उत्सव 2025 की यह दूसरी कड़ी थी। पहली बार यह आयोजन फरवरी में छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर-चांपा जिले में OLF, HSBC और जांजगीर जिला शिक्षा विभाग के संयुक्त प्रयास से हुआ था, जिसने शिक्षकों और अधिकारियों को एकजुट होकर सीखने और विचारों के आदान-प्रदान का मंच प्रदान किया।

गडचिरोली में आयोजित इस दूसरे संस्करण में, ZP CEO सुहास गाडे ने FLN के महत्व पर ज़ोर दिया और अगले तीन महीनों में छात्रों की सीखने की क्षमताएं मज़बूत करने का आवाहन किया। OLF के संस्थापक और CEO श्री संजय डालमिया ने 'बोलेगा बचपन' जैसे सृजनात्मक प्रयासों की चर्चा की और बताया कि विनोबा की ओर से आगामी सत्र में बच्चों के भाषा कौशल को समृद्ध करने हेतु "स्पेलिंग बी", "स्टोरीटेलिंग", "पोएट्री रेसीटेशन" और महावाचन जैसे कार्यक्रम शुरू किए जाएंगे।

कार्यक्रम का एक प्रमुख हिस्सा रहा — 10 महत्वपूर्ण विषयों पर गहन समूह चर्चा, जिनमें सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता, क्लस्टर प्रमुखों की भूमिका और कमज़ोर स्कूलों के लिए सुधार की रणनीतियाँ जैसी ज़मीनी बातें शामिल थीं।

"मॉर्निंग असेंबली के ज़रिए छात्रों का समग्र विकास" विषय पर आयोजित एक खास पैनल चर्चा हुई। विनोबा टीम के अमोल मावकर द्वारा संचालित इस चर्चा में शिक्षकों ने बताया कि कैसे स्कूल की सुबह की सभा को बच्चों के व्यक्तित्व विकास का प्रभावशाली मंच बनाया जा सकता है।

टीम विनोबा के विजय वावगे और वैदेही शालू ने कार्यक्रम का मंच संचालन किया। सांस्कृतिक गतिविधियों में पपेट शो और शिक्षक खुर्शीद शेख द्वारा प्रस्तुत गणित गीत "मी कोण तू कोण" ने सभी का मन मोह लिया। वहीं, "चाईनीज व्हिस्पर्स" खेल ने संवाद और समझ की ताकत को हंसी-मजाक के अंदाज़ में उजागर किया।

अंत में, उपस्थित शिक्षकों ने कहा कि गडचिरोली जैसे जिले में इस तरह का आयोजन एक प्रेरणादायक अनुभव रहा और वे यहां से नई ऊर्जा और संकल्प के साथ लौटे हैं। हर शिक्षक की एक स्वर में उठती मांग थी, "ऐसे आयोजन हर जिले में होने चाहिए।" ■

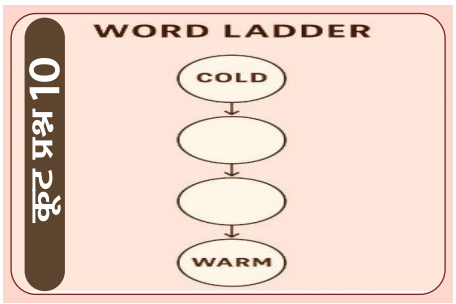

OLF का हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता करता है, उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है। साथ ही अभिनव उपक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन
बंगलो नं. 3, तात्या टोपे सोसायटी, शिवरकर गार्डन के सामने, पुणे-411040
संस्थापक: **संजय डालमिया** ■ सह संस्थापक: **रीना डालमिया**
संपादक: **अमोल मावकर**